अतिरिक्त आय अर्थात समर मूंग

कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 61–62

अतिरिक्त आय अर्थात समर मूंग

श्रेया[1], आरजू[2] एवं रजत[1]
[1]चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
[2]महाराणा प्रताप हॉर्टिकल्चरल यूनिवर्सिटी, करनाल, भारत।
Email Id: nagpalshreya1998@gmail.com

मार्च – अप्रैल के माह में खाली पड़े खेत का प्रयोग समर मूंग यानी ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती के लिए किया जा सकता है। ग्रीष्मकालीन मूंग एक उच्च नकद मूल्य वाली फसल है और इसकी खेती का समय राज्य में गेहूं की कटाई और चावल की बुवाई के बीच अच्छी तरह से फिट बैठता है। यह कम अवधि की फसल है जिसे उगने में लगभग 60 दिन लगते हैं।किसानों के लिए अतिरिक्त आय का स्त्रोत होने के साथ साथ यह दलहनी फसल मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा भी बढ़ाती है जिसके परिणामवश अगली बोये जाने वाली फसल का भी बेहतर उत्पादन होता है। गत तीन वर्षों से खरीफ सीजन में हो रही बेमौसम बारिश के कारण मूंग व अन्य दलहनी फसलों की खेती किसानो के लिए घाटे का सौदा रही है। ऐसे में समर मूंग की खेती किसानों के लिए निश्चित ही लाभदायक सिद्ध हो सकती है। समर मूंग के अनेक फायदों को देखते हुए कृषि वैज्ञानिक किसानों को इसकी खेती करने की सलाह देते हैं।

समर मूंग की खेती के लाभः

1. फसल चक्र के समय अधिक तापमान तथा कम आर्द्रता होने के कारण इसमें बीमारियों व कीटों का प्रकोप कम होता है जिसकी वजह से फफूंदनाशकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
2. फसल की बीजाई अवशिष्ट नमी में की जाती है तथा यह फसल काम पानी वाली क्षेत्रों में भी आसानी से ली जा सकती है।
3. दलहनी फसल होने के कारण यह कृषि के विविधीकरण को प्रोत्साहित करती है और सतत उत्पादन में सहायता करती है।
4. सरकार द्वारा इसका न्यूनतम समर्थन मूल्य ₹ 8558 प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है जोकि अन्य फसलों के मुकाबले काफी अधिक है।
5. पिछले कुछ वर्षों में बेमौसम बारिश की वजह से जिन क्षेत्रों में किसान खरीफ दलहनी फसल नहीं ले पा रहे हैं, वहाँ समर मूंग निश्चित आय का साधन बन सकता है।
6. यदि फिर भी पकने के समय बारिश होजाए, तो फसल का प्रयोग हरी खाद के रूप में किया जा सकता है जिससे आगामी फसल की पैदावार में वृद्धि होगी।

खेती की विधिः

Krishi Kumbh
Online E-Magazine
www.KrishiKumbh.com

बीजाई एवं बीजोपचारः समर मूंग की बीजाई का उपयुक्त समय मार्च का पूरा माह है। 15 अप्रैल के बाद बीजाई करने पर अगली फसल की बुवाई में देरी होने की सम्भावना रहती है। शीघ्र पकने वाली प्रजातियाँ जैसे MH 421, MH 318, SML 668 आदि समर मूंग के लिए उपयुक्त हैं । बीजाई के लिए किसान प्रति एकड़ 10 से 12 किलोग्राम बीज का उपयोग कर सकते हैं। बीजोपचार के लिए किसान राइजोबियम टीके का प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए 50 ग्राम गुड़ को 200 मिलीलीटर पानी में घोलकर बीजों पर छिड़क दें जिससे बीज चिपचिपे हो जाएं। चिपचिपे बीज के ऊपर टीके को छिड़ककर हाथ से अच्छी तरह से मिला दें। इसके बाद बीज को छाया में सुखाकर बीजाई करें।

पोषक तत्व प्रबंधन :

समर मूंग की बीजाई के समय 6 से 8 किलोग्राम शुद्ध नाइट्रोजन (13–17.5 कि. ग्रा. यूरिया) व 16 किलोग्राम शुद्ध फासफोरस (100 कि. ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट) प्रति एकड़ काफी होती है। बाद में मूंग स्वयं वातावरण से नाइट्रोजन अर्जित कर लेती है।

सिंचाई प्रबंधनः

फसल में पहली सिंचाई बीजाई के 20 से 22 दिन बाद करें। तत्पश्चात अव्यशकतानुसार सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रणः

बुआई के चार सप्ताह बाद एक बार गुड़ाई करना ठीक रहता है। बुआई के तीन दिन के अंतर्गत पेंडिमेन्थालिन 30 ईसी 1 लीटर प्रति एकड़ द्वारा रासायनिक नियंत्रण भी किया जा सकता है।

रोग और कीट नियंत्रणः

मूंग सेमीलूपर, तम्बाकू कैटरपिलर, बालों वाली कैटरपिलर, फली छेदक और सफेद मक्खी के प्रति संवेदनशील है। 400 मिलीलीटर मैलाथियान 50 बीसी या 250 मिलीलीटर रोगोर 30 बीसी या 250 मिलीलीटर मेटासिस्टैक्स 25 ईसी को 250 लीटर पानी में मिलाकर 2–3 सप्ताह के अंतराल पर प्रति एकड़ छिड़काव करने से कीटों को नियंत्रित किया जा सकता है। इल्लियों के नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफॉस 56 एसएल की 250 मि.ली. या 200 मि.ली. डाइक्लोरवास 76 बीसी या 500 मिली क्यूनालफॉस 25 बीसी को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ खेत में छिड़कना चाहिए।

फसल कटाईः

मूंग की फलियों जब काली पड़ने लगे तथा सुख जाये तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिए। अधिक सूखने पर फलियां चिटकने का डर रहता है।

उत्पादनः

वैज्ञानिक विधि से खेती करने पर समर मूंग की 6 – 7 क्विटंल प्रति एकड़ उपज प्राप्त की जा सकती है।

भण्डारणः

बीज के भण्डारण से पहले अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए। बीज में 8 से 10 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं रहनी चाहिए। मूंग के भण्डारण में स्टोरेज बिन का प्रयोग करना चाहिए।